नाद-नर्तन
जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूजिक
ISSN: 2349-4654
वर्ष : 14, अंक : 1, जनवरी 2026

पंडित कुमार गंधर्व का संगीत दर्शन : लोक और शास्त्रीय संगीत का समन्वय

डॉ. रानी
असिस्टेंट प्रोफेसर, इटरनल यूनिवर्सिटी, बड़ू साहिब, हिमाचल प्रदेश

शोध-पत्र

समय समय पर संगीत जगत में बहुत से शास्त्रीय संगीतज्ञों ने अपना अमूल्य योगदान संगीत जगत को दिया है। और संगीत तथा उसकी विविध गायन शैलियों को भिन्न भिन्न प्रकार से सौंदर्यपूर्वक प्रस्तुत किया है। किन्तु पं.कुमार गंधर्व जी ने जिस प्रकार से संगीत का चिंतन मनन किया, जैसा संगीत को समग्र रूप से उनका देखने का नज़रिया था, अविस्मरणीय संगीत प्रस्तुतियाँ जो उन्होंने दी अथवा उनके सृजनात्मक कार्य चाहे वह शास्त्रीय संगीत की अद्भुत प्रस्तुति हो, रागों का सृजन हो, बंदिशों का निर्माण हो, विविध विषय परक सांगीतिक कार्यक्रमों का प्रस्तुतिकरण हो या फिर कबीर के पदों का अलौकिक गायन हो उसका क्षेत्र कुछ भिन्न था जो कि उन्हें अन्य संगीतज्ञों से भिन्न करता था। जिसका एक विशेष कारण था उनका लोक संगीत के साथ गहरा जुड़ाव। साथ ही उन्होंने संगीत का दायरा किसी एक घराना परंपरा तक ही सीमित नहीं रखा बल्कि विविध घरानों के विशेष गुणों को भी साथ लेते हुए उसे लोकजीवन से कुछ इस प्रकार जोड़ा कि वह संगीत मानो एक अलग ही रस, भाव व सौंदर्य को प्रतिध्वनित करता सा प्रतीत होने लगा। ऐसा संगीत जो न उससे पहले कभी सुना गया हो और न ही कभी इस प्रकार का विचार भी किसी ने किया हो। लोक और शास्त्रीय संगीत का जो सुंदर समन्वय होकर जिस प्रकार का नाद सौंदर्य सृजित होता है उनके गायन में, वह भारतीय संगीत की विविधता, गहनता, सरलता तथा मधुरता का सम्मिश्रण बन एक नयी दृष्टि प्रदान करता है। और यही एक विशेष कारण है कि उनके संगीत का प्रभाव न केवल संगीत जगत तक सीमित रहा अपितु साहित्य जगत के विविध लेखकों तथा चित्रकारों पर भी उनका बहुत प्रभाव पड़ा।

'कुमार जी उन लोगों में से थे जिन्होने हमारी आधुनिकता, आधुनिक बोध को पश्चिम से अलग अपनी तरह से गढा है। उन्होंने देशी संगीत में आधुनिकता को खोजा है' (प्रयाग शुक्ल)।

पं. कुमार गंधर्व ने 'मालवा की लोकधुनें' शीर्षक जो कि उनके द्वारा प्रस्तुत किये जाने वाले विषयरक संगीत कार्यक्रमों की श्रृंखला में से ही एक ऐसा कार्यक्रम था जिसने संगीत जगत में एक नवीन सोच का आह्वान किया था। ऐसा इसलिए कहा जा सकता है क्योंकि इस कार्यक्रम की विशेष बात यह थी कि उनसे पूर्व किसी भी शास्त्रीय गायक ने कभी भी इस प्रकार लोक संगीत पर आधारित संगीत की सम्पूर्ण प्रस्तुति नहीं दी थी। इसमें पं. कुमार गंधर्व जी ने लोक गीतों का गायन शास्त्रीय संगीत की शैली के अनुसार कुछ इस प्रकार किया जिसमें लोक संगीत व शास्त्रीय संगीत का ऐसा तादाम्य हुआ जिसके परिणामस्वरू श्रोतागण को एक नवीन अनुभूति अथवा ऐसी रसाभिव्यक्ति हुई जिसने संगीत की एक अलग लोक की ही मानो रचना कर दी हो। जिससे कला जगत को एक नवीन आयाम भी प्राप्त हुआ।

वैसे हमारी लोक संगीत की जो पृष्ठभूमि है उसमें हमारी संस्कृति, भावनात्मक सरलता व गहनता, मधुरता, कोमलता, चंचलता इत्यादि की सम्पूर्ण अभिव्यक्ति संभव होती है। तो दूसरी ओर शास्त्रीय संगीत राग, स्वर, लय. ताल के साथ भाव की असीम गहराई को लिये हुए शास्त्रबद्ध है। यह दोनों ही शैलियाँ हमारी संस्कृति के मूल स्तम्भ है। जिसे एक अद्भुत रूप में उन्होंने समन्वय किया। वास्तव में पं. कुमार गंधर्व जी को एक ओर तो शास्त्रीय संगीत का गहन ज्ञान था। तो दूसरी ओर लोक संगीत की गहन अनुभूति तो इन दोनों के आधार से जो उन्होंने चिंतन-मनन किया विचार किया उसने एक अद्वितीय रूप धारण किया।

पं. कुमार गंधर्व का संगीत शिक्षण 'देवधर स्कूल ऑफ इण्डियन म्यूज़िक' में प्रो.बी आर देवधर जी के सान्निध्य में ग्वालियर घराने की बारीकियों को सीखा तथा साथ ही अन्य घरानों के महान संगीतज्ञों तथा उनकी गायकी के संपर्क में वह आये जिससे उनकी गायकी में विविध घरानों के सौंदर्यात्मक तत्वों का भी समावेश होता गया। 'विशेष रूप से पं. कुमार गंधर्व जी की गायकी में ग्वालियर घराना, जयपुर घराना, आगरा घराना तथा किराना घराने का प्रभाव अधिक दर्शित होता है'(गंधर्व, कुमार,अनूप राग विलास,पृ 28)। पंडित जी लोक संगीत के संपर्क में तब आये जब रूग्णावस्था में 5 वर्षों तक उनका देवास में रहना हुआ। उस दौरान वे मालवा प्रांत के लोक जीवन व लोक संगीत से परिचित हुए। जिससे उनके जीवन व संगीत में वृहद बदलाव आया। उन दिनों पंडित जी को केवल विश्राम करने के लिए कहा गया था। तो फिर आस-पास से आ रही ध्वनियों व लोक गीतों इत्यादि की ओर उनका

ध्यान विशेष रूप से गया। वे ध्वनियाँ उनकी दिनचर्या का एक हिस्सा सी बन गयी। धीरे-धीरे लोक संगीत के साथ उनका जुड़ाव बढ़ता चला गया। जिसने उनके संगीत को एक अनोखा मार्ग प्राप्त हुआ जिसमें लोक और शास्त्रीय संगीत का एक ऐसा समन्वय हुआ जो कि अलौकिक था। साथ ही वही वह समय था जहाँ उनके मन में इस विचार का संचरण हुआ कि लोक संगीत से ही राग संगीत की उत्पत्ति हुई है। इस विचार ने उन्हें रागों की सृजना करने के प्रति प्रेरित किया। अतः मालवा क्षेत्र की लोकधुनों से प्रेरित होकर उन्होंने विविध रागों की रचना की, तथा जिन्हें उन्होंने 'धुनउगम राग' की संज्ञा दी। ये राग लोकसंगीत और शास्त्रीय संगीत के समन्वय का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करते हैं।

पंडित कुमार गंधर्व द्वारा निर्मित प्रमुख धुनउगम रागों में राग मालवती, राग अहिमोहिनी, राग सहेली तोड़ी, राग मधवा, राग राही तथा राग मधसुरजा उल्लेखनीय हैं। इन रागों के निर्माण में उन्होंने स्वरों के प्रयोग के साथ-साथ श्रुतियों का भी सूक्ष्म विश्लेषण किया है। प्रत्येक राग के स्वरूप को स्पष्ट करने के लिए उन्होंने 'रागात्मा' शब्द का प्रयोग किया, जो किसी राग की पकड़ का पर्याय माना जाता है।

इन रागों के अंतर्गत पंडित जी ने अनेक बंदिशों की रचना की, जो उनके सृजनात्मक कौशल का परिचायक हैं। उन्होंने न केवल इन रचनाओं का सृजन किया, बल्कि देश के विभिन्न संगीत सम्मेलनों में इन्हें प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत कर इन रागों का अद्भुत प्रदर्शन भी किया। वैसे तो शास्त्रीय संगीत के नियमानुसार किसी भी राग में कम से कम पाँच स्वरों का होना आवश्यक माना जाता है, किंतु कुमार गंधर्व द्वारा रचित राग 'लगनगंधार' में इस परंपरागत नियम से हटकर आरोह में चार तथा अवरोह में छह स्वरों का प्रयोग किया गया है, जिससे इसकी जाति चंतु–षाडव मानी जाती है। यह प्रयोग उनकी वैचारिक स्वतंत्रता एवं संगीत-दृष्टि को स्पष्ट करता है। राग मालवती का नामकरण मालवा क्षेत्र के नाम पर किया गया है। राग मधसुरजा की उत्पत्ति के संबंध में कहा जाता है कि यह संध्या समय बकरे की बलि के दौरान उत्पन्न करुण ध्वनि से प्रेरित है, जिससे इसके स्वरों में विशेष भावात्मकता उत्पन्न होती है। इसी प्रकार राग लगनगंधार में गंधार स्वर की लगन को केंद्र में रखा गया है, जिसमें कोमल और शुद्ध गंधार के सूक्ष्म अंतर को प्रभावशाली रूप में दर्शाया गया है। राग अहिमोहिनी की उत्पत्ति नागदेवता की पूजा के समय पुंगी द्वारा उत्पन्न धुन से मानी जाती है, जो इसके लोक-आधार को रेखांकित करती है।

इस प्रकार पं. कुमार गंधर्व के धुनउगम राग न केवल शास्त्रीय संगीत के विस्तार में सहायक सिद्ध हुए, बल्कि लोकधुनों को शास्त्रीय मंच प्रदान कर भारतीय संगीत परंपरा को नई दिशा भी प्रदान करते हैं।

'पंडित जी की यदि गायकी की बात की जाये तो एक ओर तो उनके स्वरों में शास्त्रीय संगीत की गहराई दिखती तो दूसरी ओर लोक संगीत की सहजता व सरलता, मानों माटी की सुंगध ही उसमें शामिल हो गई हो। श्री भुवनेश कोमकली जी कहते है कि प्राकृतिक चीज़ों से प्राप्त उनकी खुद की अनुभूतियों को भी पंडित जी नादात्मक रूप में प्रस्तुत करते थे।'(भुवनेश कोमकली)

इसके अतिरिक्त आध्यात्म की अनन्त उचाईयाँ, चित्र का भराव, अभिनय की अभिनयात्मकता इत्यादि का भी समावेश हमें उनकी गायकी में देखने को मिलता है। विख्यात लेखक श्री अशोक वाजपेयी जी ने उनकी गायकी के विषय में कहा है कि वह आवाजों की आवाज़ है वह पृथ्वी को घेरती और आकाश को टेरती आवाज़ है।

पंडित जी ने लोकसंगीत तथा निर्गुणी भजनों के आधार पर भजन गायन की एक नवीन और मौलिक शैली का भी निर्माण किया। इससे पूर्व शास्त्रीय गायक सामान्यतः रागदारी स्वरूप में ही भजन प्रस्तुत करते थे, जिसमें शास्त्रीय सांगीतिकता का प्राधान्य होता था। किंतु कुमार गंधर्व जी ने इस परंपरा में मौलिक परिवर्तन किया।

उन्होंने भक्ति संगीत के अंतर्निहित सांगीतिक तत्त्वों को पहचानकर उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया कि उनके गाए हुए भजन साधुओं के अखाड़ों में गाए जाने वाले पारंपरिक भजनों की अनुभूति कराने लगे। इस शैली की प्रेरणा उन्हें बालनाथ योगियों की भजन परंपरा से प्राप्त हुई। कुमार गंधर्व जी ने इन पारंपरिक भजनों के साथ अपने संगीत चिंतन का सम्मिश्रण कर भजन गायकी को एक नया आयाम प्रदान किया।

कबीर के पदों का गायन उनके भक्ति संगीत की विशेष पहचान है। कबीर वाणी के प्रस्तुतीकरण में वे जिस प्रकार शून्य और मौन का सृजन करते थे, वह श्रोता को गहरे आध्यात्मिक अनुभव से जोड़ देता है। उनके द्वारा गाए गए पदों में साहित्य मानो सजीव होकर संगीत का रूप धारण कर लेता है। विशेष रूप से "निरभय निरगुण", "सुनता है गुरु ज्ञानी", "उड़ जाएगा हंस अकेला" जैसे पदों में यह प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

इसके अतिरिक्त कुमार गंधर्व जी ने मीरा, सूरदास तथा तुलसीदास के पदों का भी अत्यंत सौंदर्यपूर्ण और भावप्रवण गायन किया। उनकी भजन गायकी में शास्त्रीय संगीत, लोक तत्व और आध्यात्मिक अनुभूति का जो समन्वय दिखाई देता है, वह उन्हें भक्ति संगीत के क्षेत्र में एक अद्वितीय स्थान प्रदान करता है।

वास्तव में पं. कुमार गंधर्व द्वारा निर्मित राग, बंदिशें, भजन, उनकी विशिष्ट गायन शैली तथा उनके द्वारा प्रस्तुत संगीत कार्यक्रम भारतीय संगीत जगत में अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। इसका प्रमुख कारण यह है कि उनके संपूर्ण संगीत-सृजन में उनकी व्यक्तिगत, मौलिक और नवाचारी सोच की स्पष्ट छाप दिखाई देती है। उनके संगीत में न केवल गहराई और भावात्मकता है, बल्कि विविध शैलियों, चाहे वह शास्त्रीय संगीत हो, लोक संगीत तथा भक्ति संगीत और कलाओं का ऐसा समन्वय मिलता है, जिसका कोई समानांतर उदाहरण नहीं है।

कुमार गंधर्व जी के संगीत की विशेषता यह थी कि वे संगीत और साहित्य—दोनों को समान महत्त्व देते थे। उनके लिए संगीत केवल स्वरों का संयोजन नहीं, बल्कि एक संपूर्ण कलात्मक अनुभव था। यही कारण है कि उन्होंने संगीत के साथ-साथ अन्य कलाओं को भी अपने सृजनात्मक चिंतन में स्थान दिया। कहा जाता है कि जब वे गायन करते थे, तो ऐसा प्रतीत होता था मानो कोई चित्रकार कैनवस पर रंगों से चित्र उकेर रहा हो। इस चित्रात्मकता के कारण उनके गायन

में एक विशिष्ट सौंदर्य और जीवंतता दिखाई देती है। इस प्रकार पं. कुमार गंधर्व का योगदान केवल राग-रचना या गायन तक सीमित नहीं है, बल्कि उन्होंने भारतीय संगीत को एक नई दृष्टि, नई संवेदना और नवीन अभिव्यक्ति प्रदान की। उनके संपूर्ण सृजनात्मक कार्य संगीत इतिहास में एक विशिष्ट और प्रेरणादायक अध्याय के रूप में सदैव स्मरणीय रहेंगे।

उद्देश्य

इस शोध-पत्र का मुख्य उद्देश्य पं. कुमार गंधर्व के संगीत दर्शन का संक्षिप्त एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इसमें यह समझने का प्रयास किया गया है कि उन्होंने लोक और शास्त्रीय संगीत के समन्वय के माध्यम से किस प्रकार एक नवीन और मौलिक संगीत-दृष्टि का निर्माण किया। साथ ही उनके धुनउगम रागों, गायन शैली, भजन गायकी तथा संगीत में निहित नवाचार और सौंदर्यात्मक तत्वों का अध्ययन किया गया है। यह शोध उनके संगीत का भारतीय संगीत परंपरा और समकालीन कला-जगत पर पड़े प्रभाव को समझने का भी प्रयास करता है।

क्षेत्र

इस शोध का क्षेत्र पंडित कुमार गंधर्व की गायकी, रचनाएँ तथा उनके द्वारा प्रस्तुत लोक-धुनों और शास्त्रीय रागों के सम्मिलन तक सीमित है। इसमें विशेष रूप से उनके 'निर्गुण भक्ति संगीत', 'लोकगीतों के शास्त्रीय रूपांतरण' और 'रागदारी संगीत' में प्रयोगों का अध्ययन किया गया है।

कार्यप्रणाली

वर्णनात्मक व विश्लेषणात्मक कार्यप्रमाली।

साहित्य अध्ययन : पंडित कुमार गंधर्व पर प्रकाशित ग्रंथ, लेख एवं साक्षात्कार का अध्ययन।

संगीत श्रवण : उनके गायन की ऑडियो एवं वीडियो रिकार्डिंग का विश्लेषण।

तुलनात्मक अध्ययन : लोकधुनों एवं शास्त्रीय रचनाओं के बीच किए गए प्रयोगों का विश्लेषण।

समीक्षा पद्धति : उनके शिष्यों एवं समकालीन विद्वानों द्वारा दी गई व्याख्याओं का अवलोकन।

शोध-परिणाम

पंडित कुमार गंधर्व ने सिद्ध किया कि लोक और शास्त्रीय संगीत एक-दूसरे के पूरक हैं। उन्होंने 'निर्गुण भक्ति गीतों' को एक अनोखी प्रस्तुति दी। उनकी गायकी में रागदारी और लोकधुनों का संयोजन भारतीय संगीत की बहुआयामी धारा को प्रकट करता है। उन्होंने यह विचार स्थापित किया कि संगीत केवल परंपरा का अनुकरण नहीं, बल्कि जीवन और समाज से संवाद का माध्यम है। समकालीन संगीतकारों के लिए वे एक प्रेरणा बने, जिन्होंने प्रयोगधर्मी दृष्टिकोण को प्रोत्साहित किया।

निष्कर्ष

पं. कुमार गंधर्व का संगीत-दर्शन भारतीय संगीत परंपरा में एक निर्णायक मोड़ लेकर आया। लोक और शास्त्रीय संगीत का अद्भुत समन्वय उनकी गायकी की सबसे बड़ी विशेषता रही है। उनके स्वर-प्रस्तुतीकरण की शैली में जिस प्रकार की कहन है, संवाद और चित्रात्मकता दिखाई देती है, वह उन्हें समकालीन एवं पूर्ववर्ती गायकों से भिन्न और विशिष्ट बनाती है। उनके गायन में काकु-प्रयोग का सौंदर्यपूर्ण उपयोग भी स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है, जिससे भावाभिव्यक्ति और अधिक प्रभावशाली बन जाती है।

पंडित जी की गायकी में कभी शब्द सजीव होकर सामने आते हैं, तो कभी स्वर चित्रात्मक रूप ग्रहण कर लेते हैं, और कभी ध्वनि एक सार्वभौमिक अनुनाद के रूप में श्रोता के भीतर तक गुंजायमान हो उठती है। कुमार गंधर्व जी ने यह सिद्ध किया कि शास्त्रीय संगीत को केवल नियमों और संरचनाओं की कठोरता में नहीं बाँधा जाना चाहिए, बल्कि उसे जीवन, लोक-संस्कृति और मानवीय अनुभूतियों से जोड़कर और अधिक जीवंत, संवेदनशील तथा प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

इस प्रकार पं. कुमार गंधर्व का संगीत-दर्शन आज भी भारतीय संगीत जगत के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है और आने वाली पीढ़ियों को नवीन सोच, सृजनात्मक स्वतंत्रता तथा परंपरा के नव-अर्थ की खोज के लिए प्रेरित करता रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गंधर्व कुमार, अनूप राग विलास ग्रंथ, मौज प्रकाशन बम्बई, 1965
2. कोमकली कलापिनी, कालजयी कुमार गंधर्व, राजहंस प्रकाशन, पुणे, 2014
3. पोतदार बसंत, पं. कुमार गंधर्व, मेधा बुक्स प्रकाशन, नवीन शहादरा, दिल्ली 2004
4. चक्रवर्ती कविता, भारतीय संगीत को महान संगीतज्ञों की देन,राजस्थानी ग्रंथागार, प्रकाशन एवं वितरक, जोधपुर 2001
5. श्रीवास्तव हरिश्चन्द्र, हमारे प्रिय संगीतज्ञ, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद 1987
6. वाजपेयी अशोक, बहुरि अकेला, वाणी प्रकाशन, अंसारी रोड, दिल्ली, 1999
7. संगीत कला विहार, अखिल भारतीय गांधर्व महाविद्यालय प्रकाशन, 1974
8. बांगरे अरुण, संगीत कला विहार, मध्यप्रदेश कला परिषद प्रकाशन, 1996-97
9. कुमार कुलदीप, संगना, अंक 18, संगीत नाटक अकादेमी प्रकाशन।
10. साक्षात्कार, प्रयाग शुक्ल, साक्षात्कर्ता : रानी, मई 2016।
11. साक्षात्कार, कोमकली, भुवनेश, साक्षात्कर्ता : रानी, जून 2016।